ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-2* May- 2017
Anthology : The Research

वैज्ञानिक परिदृष्य में रामचरित मानस, एक अवलोकन

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
रीवा, म.प्र.

सारांश

वर्तमान समय के बदलते सामाजिक, वैज्ञानिक, प्राकृतिक, वैज्ञानिक, पर्यावरण, परिवेश में रामचरितमानस का महत्व और भी अधिक हो गया है।आज 21 वीं सदी के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मानस का आकलन करें, तो भी आज के दौर का वैज्ञानिक पक्ष का हर चिंतन रामचरितमानस मे दृष्टिगोचर होता है। मानस मे रसायन, भौतिकी, जीव विज्ञान,एवं पर्यावरण विज्ञान से संबधित अनेक चौपाई व दोहे दृष्टि मे आते हैं। काव्य कौशल व कला सौंदर्य की दृष्टि से रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकता और पर्यावरण की दृष्टि से ओत–प्रोत महाकाव्य है, इसका कथानक विभिन्न–विभिन्न भागों में विभक्त है। इस आदर्षवादी महाकाव्य मे विज्ञान के अनेक पक्षों को समाहित करते हुए तुलसीदास जी ने जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से धार्मिक एवं सामाजिक समरसता के मध्य अंतरसम्बन्ध स्थापित किया वह किसी महाकाव्य मे नहीं दिखाई पड़ता मानस में रसायन विज्ञान के अध्याय सें विश्वबन्धुत्व एवं सामाजिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ हैं। मानस को सामाजिक, राजनैतिक, और विज्ञान ने उसे अत्यंत गहरे तक जोड़ दिया है। जीव की उत्पत्ति को मानस मे अत्यंत सरल रूप से दिखाया गया है। रामचरितमानस राष्ट्र प्रेम, पारिवारिक एवं सामाजिक आदर्श, सत्य, अहिंसा, त्याग, प्रेम, करूणा, सरलता , आदि शाश्वत मूल्य अपनी सम्पूर्ण विज्ञान की तेजस्विता के साथ प्रकाशवान है व वैज्ञानिकता से भरपूर है। रामचरितमानस का सम्मपूर्ण अनुवाद अंग्रेजी मे सन् 1883 मे संभव हो पाया। यह अनुवाद एफ.एस. ग्राउज जो एक अंग्रेजी अधिकारी उत्तर प्रदेष मे पदस्थ थे उनके द्वारा किया गया था। उनके अनुवाद के पश्चात् सन् 1914 तक इसके सात संस्करण प्रकाशित हो गए थे। ग्राउज ने अपने अनुवाद मे 19 पृष्ठ की भूमिका लिखी है। सामाजिक परिदृष्य मे रामचरित मानस आज भी प्रासांगिक है।

मुख्य शब्द : रामचरितमानस, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विश्व साहित्य, तेजस्विता, प्रकाशवान, सामाजिक परिदृष्य,पर्यावरण

प्रस्तावना

वर्तमान समय के बदलते सामाजिक, वैज्ञानिक, प्राकृतिक, ,वैज्ञानिक, पर्यावरण, परिवेश में रामचरितमानस का महत्व और भी अधिक हो गया है। यह एक आर्शीवादात्मक ग्रन्थ है। इसका प्रत्येक काण्ड भारतीय संस्कृति का आईना है, जिसमें भारत की तस्वीर उभरती है, और सम्पूर्ण विश्व साहित्य को प्रेरणा देती है। देखा जाये तो भक्ति, ज्ञान, नीति, सदाचार का प्रचार,प्रसार जनता में जितना इस ग्रन्थ से हुआ उतना किसी और ग्रन्थ में नही। आज 21 वीं सदी के वैज्ञानि दृष्टिकोण से मानस का आकलन करें, तो भी आज के दौर का वैज्ञानिक पक्ष का हर चिंतन रामचरितमानस मे दृष्टिगोचर होता है। मानस मे रसायन, भैतिकी, जीव विज्ञान,एवं पर्यावरण विज्ञान से संबधित अनेक चौपाई व दोहे दृष्टि मे आते हैं। इस आदर्षवादी महाकाव्य मे विज्ञान के अनेक पक्षों को समाहित करते हुए तुलसीदास जी ने जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से धार्मिक एवं सामाजिक समरसता के मध्य अंतरसंबध स्थापित किया वह किसी महाकाव्य मे नही दिखाई पड़ता।[1]

तुलसीदास जी का रामचरितमानस अवधी में लिखा हिन्दी का सर्वोत्कष्ट महाकाव्य है। इसका कथानक पूर्ण व्यवस्थित व संगठित है। प्रबन्ध पटुता, उदभावना, भक्ति के साथ –साथ उन्नत रचना कौशल, मार्मिक स्थलों का सरस निरूपण, प्रभावोत्पादकता, भाव व्यंजना, मर्मस्पर्शी संवाद, उत्कृष्टशील निरूपण,, सरस एवं सुबोध भाषा, संतुलित अलंकार योजना, भावानुकूल छन्द विधान, आदि के दर्शन रामचरित मानस मे होते हैं, जो जो उसे विश्वसाहित्य की ओर एक अलग ही पहचान देते हैं। काव्य कौशल व कला सौंदर्य की दृष्टि से रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकता और पर्यावरण की दृष्टि से ओत–प्रोत महाकाव्य है, इसका कथानक विभिन्न– विभिन्न भागों में विभक्त है। रामचरित मानस के विभिन्न भागों में समाज की समरसता और

वैज्ञानिकता को समझा जा सकता है। लक्ष्मण आदि के अनेक प्रसंगों मे जड़ी बूटी आदि की चर्चा विज्ञान व पर्यावरण के अस्तित्व को स्वीकारती है। रामचरित मानस के अनेक ऐसे प्रसंगों मे समाज की समरसता तथा सामाजिक टूटन को पूर्णतः समझा जा सकता है । मानस मे रसायन विज्ञान के अध्याय सें विश्वबधुत्व एवं सामाजिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ हैं। मानस को सामाजिक, राजनैतिक, और विज्ञान ने उसे अत्यंत गहरे तक जोड़ दिया है। जीव की उत्पत्ति को मानस मे अत्यंत सरल रूप से दिखाया गया है। जैसे पांचों अवयव जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, एवं आकाश अलग–अलग रहते है।[2]

गगन समीर अनल जल धरनी।
इन्ह कई नाथ सहज जड़ करनी ।
छिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित अति अधम सरीरा।।

रामचरितमानस राष्ट प्रेम, पारिवारिक एवं सामाजिक आदर्श, सत्य, अहिंसा, त्याग, प्रेम, करूणा, सरलता, आदि शाश्वत मूल्य अपनी सम्पूर्ण विज्ञान की तेजस्विता के साथ प्रकाशवान है व वैज्ञानिकता से भरपूर है। देखा जाए तो आज के वैष्विक दौर के सामाजिक परिदृष्य में मूल्यों की गिरावट के इस दौर मे रामचरित मानस की प्रासांगिकता व अर्थवत्ता का निरंतर नया विस्तार हो रहा है।रामचरितमान से जनजीवन अत्यंत प्रभावित है। इसके माध्यम से महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने समाज को सन्नमार्ग पर लाने का प्रयास किया। उन्होंने मानस मे अमृत लाने और लोंगों के मन मे षांति स्थापित करने का प्रयास किया। रामचरितमानस ऐसा ही है जिसको कानो में सुनते ही षान्ति मिलती है। मनरूपी ह्यथी विषयरूपी दावानल में जल रहा है, वह यदि रामचरितमानस रूपी सरोवर में आ पड़े तो सुखी हो जाए। रामकथा का महत्व बताते हुए तुलसीदास जी ने षिव और पार्वती के संभाषण द्वारा निम्न पंक्तियों में यह कहा कि जो तुमने रधुनाथ जी की कथा का प्रसंग पूछा जो कथा समस्त लोंकों के जगत को पवित्र करने वाली गंगा जी के समान है। तुमने जगत के कल्याण के लिए ही प्रष्न पूछे है। तुम श्री रघुनाथ जी के चरणो में प्रेंम रखने वाले हो। तुलसी जी का तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति ईश्वर के बारे मे प्रष्न पूछते हैं वो ज्ञानी होता है। तुलसीदास को हर व्यक्ति को ज्ञानी बनाने की इच्छा है। केवल ज्ञानी लोग भगवान की कृपा पाने के अधिकारी हैं। इसलिए रातचरितत्वामृत पान करने के लिए कहा है, वे कहते हैं कि हैं कि हे जीव, रामतत्व ग्रहण करने मे जो भ्रम व अज्ञान रूपी अवरोध है उसे तुम अवश्य दूर करो, तभी तुम्हे राम जी का कथामृत प्राप्त होगा। रामचरितमानस में षिव जी के मानस मे स्थित रामचरितमानस का वर्णन किया है, परंतु लोंगों की मुक्ति में अज्ञान एवं भ्रम ही अवरोध है। इस अज्ञान को ईश्वर की माया कहते हैं। इसके निवारण का उपाय भी बताया है। रामचरितमानस मे शिव जी ने राम की दिव्यता का वर्णन करते हुए कहा है कि , वेदों ने राम के सुंदर नाम, गुण, चरित्र, जन्म और कर्म सभी को अनगिनत कहा है। जिस प्रकार श्री राम अनंत हैं उसी प्रकार राम की कथा, कीर्ति और गुण भी अनंत है। राम सच्चिदानंद स्वरूप सूर्य हैं। वहां मोह रूपी रात्रि का लवलेश भी नही है। वे स्वभाव से ही प्रकाश रूप और भगवान हैं। रामचरितमानस जैसा ग्रंथ प्रणीत कर तुलसीदास जी ने मानव रूप को ईश्वर रूप प्रदान किया। उन्होंने रामनाम और रामचरित के महत्व पर व्यापक प्रकाश डाला है। मानस के अनुसार राम के चरित्र को सर्वप्रथम षिवजी ने रचा था और उसे अपने मन मे रखा था, आगे अवसर आने पर उन्होंने पार्वती को बतलाया था षिव जी ने इसे अपने हृदय मे देखकर और प्रसन्न होकर इसका नाम रामचरितमानस रखा। भारतीय संस्कृति का दर्पण रामचरितमानस का रस विशेष यह अमरज्ञान ही है जो हृदय की भाषा मे कहा जाता हैं। सामाजिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि देखा जाए तो गुरू, संत, सत्संग को व्यापक महत्व देते हुये अपनी उर्जस्विता, सरलता,श्रेष्ठता और व्यापकता, के द्वारा मानस ने इस देश की संस्कृतिको कायम रखने मे अप्रतिम योगदान दिया है। रामचरितमानस का सम्मपूर्ण अनुवाद अंग्रेजी मे सन् 1883 मे संभव हो पाया। यह अनुवाद एफ .एस . ग्राउज जो एक अंग्रेजी अधिकारी उत्तर प्रदेश मे पदस्थ थे उनके द्वारा किया गया था। उनके अनुवाद के पश्चात् सन् 1914 तक इसके सात संस्करण प्रकाशित हो गए थे। ग्राउज ने अपने अनुवाद मे 19 पृष्ठ की भूमिका लिखी है। सामाजिक परिदृष्य मे रामचरित मानस आज भी प्रासांगिक है, और हमेषा रहेगा। आदर्श विहीन समाज मे आदर्श रूप मे राम की स्थापना कर तुलसीदास जी ने युग प्रवर्तक का कार्य किया है। ये सत्य है कि तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों से तुलसीदास जी आहत थे और परिवर्तन चाह रहे थे, उन्होंने यह परिवर्तन अपने रामचरित मानस के माध्यम से कर युग प्रवर्तक का कार्य किया। रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से राजनैतिक, सामाजिक यवं पारिवारिक जीवन के आदर्षों को तुलसीदास जी ने जनता के सामने प्रस्तुत कर विश्रृंखलित समाज मे हो रहे नैतिक पतन को देखते हुए राम जैसे आदर्श पात्र की आवष्यकता महसूस होती है। दोहरे व्यक्तित्व का आज बोलबाला है, समाज मे इन भिन्नताओं को देखते हुए ही तुलसीदास जी ने समाज की मर्यादा पर विशेष लिखा है, पिता, पुत्र, माता, पति,पत्नी, भाई, सखा,सेवक आदि का क्या पारस्परिक व्यवहार होना चाहिए इन सब का उत्कृष्ट निरूपण रामचरित मानस की कथा मे वैज्ञानिकता को लेकर किया गया है। मानस मे सामाजिक समरसता को ध्यान मे रखकर मानस और रसायन के विलयन की बात कही गयी है। रसायन मतलब रस विलयन अभिक्रियाओं का परिणाम होता है। जो जीवन लक्षणो से बने संसार निर्माण का आधार भी है। मानस मे जीवन को जीवन वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए, संयोजन, पुनः विघटन, व संयोजन का परिणाम को अत्यंत सरल ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।

बिनु जल रस कि कोई संसारा

स्पष्ट है कि जल विलायक के बिना कोई घोल नही बनता, जैसे कि अजैविक व जैविक तत्वों के मिलन के बिना संसार नही बनता। संसार अनेक रस का यौगिक मिश्रण ही है। जल जीवन मे एकमात्र विलायक है। जल अजैविक अवयवों को अपने सहयोग एवं संयोग से जैविक मूल्य मे परिवर्तित कर देता है। देखा जाए ते इन्ही के

संयोजन से सेसार का निर्माण होता है। इस प्रकार देखा जाए तो मानस मे पदार्थ की भौतिक अवस्थाओं गैस, द्रव्य, वाष्प, जल एवं बर्फ, तीनो रूपों मे व्याख्या की गयी है। मानस मे ऐसे अनेक प्रसंग हैं। जो सामाजिक आदर्श और पर्यावरण के प्राकृतिक सौंदर्य को प्रस्तुत करता है।[3] राम का वनगमन उनके सौंदर्य का प्रतीक रहा तों राहगीरों की चर्चा का केन्द्र भी । रामचरितमानस के लेखक तुलसीदास ने राम के वन मार्ग पर चलते हुए उनके सौदर्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि राम वनमार्ग पर चलते– चलते एक नए उगे हुए वृक्ष की डाली का सहारा लेकर खड़े हुए तो उनका धनुष उनके कंधे पर और बाण उनके हांथ में, उस समय उनकी आखें बड़ी–बड़ी व भंव आदि अत्यंत सुंदर लग रहे थे। उनके गालों का सौंदर्य भी श्रम के कारण उस क्षण अत्यंत मोहक प्रतीत हो रहा था। उनके इस सौंदर्य को देख अनेक लोंगों ने अपनी प्रतिकियाऐं व्यक्त की। वन के रास्तों पर चलते हुए सांवले रंग रूपवाले राम के पीछे – पीछे लक्ष्मण सुंदर वस्त्र धारण किये हुए मनमोहक प्रतीत हो रहे। वो राहगीर और जनता के मन मस्तिष्क में बस जाते हैं। राम का रंग और सौंदर्य लोंगों के आकर्षण का केन्द्र रहा। वन मार्ग होते हुए जब राम ग्रामीण अंचल की ओर गुजरते हैं तो वहां की ग्रामीण महिलाओं की आपसी बातचीत से एक अलग ही वातावरण निर्मित हो जाता है। वे कहती हैं कि राम वनगमन की कहानी जानकर मुझे ये बात समझ आती है कि रानी कैकेयी अज्ञानी है उसका ह्रदय वज्र और पत्थर सा कठोर है। उनका ये भी कहना कि राजा ने चौदह वर्ष के वनवास की आज्ञा देकर कोई बुद्धिमानी का परिचय नहीं दिया है। जो लोग आखों मे बसाने लायक हैं उन्हें वनवास की आज्ञा देना उचित नही। इस प्रकार वन मार्ग के इतने पड़ावों में जनश्रुति का आक्रोश भी दृष्टिगत हुआ, जो स्वाभाविक था। राम वनगमन के पश्चात् जब भरत को ये जानकारी प्राप्त होती है कि मुझे राजगद्दी देने के लिए बड़े भाई श्री राम को मां कैकेयी ने चौदह वर्ष का वनवास करवा दिया है तो वो अत्यंत दुखी हुए, और राम को मनाने वन की ओर चल दिए। उस समय का दृष्य अत्यंत मर्मस्पर्षी व भवुकता से ओतप्रोत है। राम को खोजते हुए वो जब चित्रकूट पहुँचे तो राम से मिल अत्यंत भावविभोर हो गए, उनकी खुशी का ठिकाना नही रहा। राम बड़ी ही आत्मीयता से भरत को अपने गले लगा लिया। भरत कहा कि भाई वापस अयोध्या लिए और राजगददी संभालिए। तब राम ने कहा भरत तुम जाओ और गददी पर बैठ प्रजा का ध्यान रखो। भरत की कोशिश के बावजूद राम वापस नही गए। तब अत्यंत भारी मन से भरत वापस अयोध्या गए और राजगद्दी में ही राम की चरण पादुका स्थापित कर अयोध्या से बाहर एक कुटी बनाकर चौदह वर्ष तक निवास किया ये एक भाई के प्रेम और स्नेह की पराकाष्ठा है जो आज की भारतीय जनता और समाज के लिए प्रेरणाप्रद हैं।

मानस मे पर्यावरण का सौंदर्य अप्रितम है। पर्यावरण को उन्नत बनाने के लिए मानस में अनेक उदाहरण आए है। इससे सतत विकास व सामाजिक समरसता को प्राप्त किया जा सकता है। जैसे की भीषण आक्सीकारकों की उपस्थिति मात्र से ही वातावरण जलने सा लगता है। देखा जाए तो मानस मे शंकर की बारात का अनूठा चित्रण पर्यावरण को लेकर हुआ है। जहां षंकर जी का श्रृंगाार पर्यावरण का श्रेष्ठ चित्रण प्रस्तुत करता है। जिसमे सिर मे गंगा मतलब षुद्ध जल सर्वोपरि , माथे पर चन्द्रमा, पर्यावरण मित्रवत, अर्थात पृथ्वी की प्राकृतिक विषालतम सोलन प्लेट नयन तीन सोंपो का जनेउ एम्फीबियिन एवं टरायफीबियन की रक्षा आदि को षामिल किया गया है। इसका एक अच्छा उदाहरण है–

ससि ललाट सुंदर सिर गंगा।
नयन तीनि उपबीत भुजंगा।। [4]

देखा जाए तो मानस के अलावा पर्यावरण का इससे अच्छा उदाहरण शायद ही कहीं देखने को मिले। रामचरितमानस में सबकुछ समाहित है। पर्यावरण का उदाहरण तो रामचरितमानस का उत्कृष्ट उदाहरण है। धरती के रूप मे पर्यावरण के सभी अजैविक कारको पर्वतों, नदी, तालाबों की रक्षा एवं उनका आमंत्रण व समन्वय के साथ बारातियों में सभी प्राणियों का आवाहृन कर बायोडायर्वसिटी की रक्षा का संकेत देता है। कुष, घास, पानी, और पार्वती का हांथ देकर हिमालय पुंष्ट होता है। इस प्रकार रामचरित मानस के पर्यावरण विज्ञान मे अध्ययन से पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्थान की प्रेरणा मिलती है। रामचरित मानस के ऐसे कई प्रसंग हैं जो पर्यावरण सौंदर्य के परिचायक हैं। देखा जाए तो वनगमन के समय वन के प्राकतिक सौंदर्य का दृष्टि अत्यंत मनमोहक है। रघुकुल शिरोमणि श्री राम 14 वर्षों तक जनक नन्दिनी सीता व अनुज लक्ष्मण के साथ वन मे रहे। सृष्टि के समस्त राजसी ठाट –बाट छोड़कर रामवन संस्कति के मध्य वननायक के रूप मे अपना जीवन यापन करते है। वन मे पहुंचते ही गुह द्वारा शयन हेतु कुश और कोमल पत्तों की साथरी बिछा दी जाती है और पवित्र मीठे कोमल फल दोनो मे भर–भर कर फल मूल और पानी रख दिया जाता है–

गुहें सवारि सोंधरी डसाई,
कुस किसलय मय मृदुल सुहाई।
सुचि फल मूल मधुर मृदुजानी,
दोना भरि राखेसि पानी।।

मानस मे कामदगिरि का वर्णन पर्यावरण की दृष्टि अत्यंत आकर्षित करता है। कामदगिरि के वर्णन में पर्वतीय सुषमाकी एक भव्य झांकी अंकित की है।जिसमे विविध विहंगों, विविध प्रकार के मृगों, झर–झर करते हुए झरनों, चकवा, चकोर चातक, पिक मराल आदि के कलरवों, अलिगण, के गुंजनों ,मयूरों के नृत्यों एवं बेलि विटप आदि के कुसुमित,प्रसूनों के वर्णन द्वारा एक मंगलमूला प्रकृति एवं पर्यावरण के नैसर्गिक सौंदर्य की अदभुत छटा का चित्रण अवलोकनीय है–

झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं
मनहुं निशान विविध विधि बाजहिं।
चक चकोर चातक सुक पिकगन
कुजत मंजु मराल मुदित मन।।
अलिगन गावत नाचत मोरा जनु सुराज मंगल चहु ओरा।

बेलि बिटप तृन सफल सफूला सब समाजु मुद मंगल मूला। देखा जाए तो वन प्रदेश पर्यावरण व प्रकृति की अदभुत क्रीड़ा स्थली है। इसमे स्थान–स्थान पर वन,

पर्वत, नदी, सरोवर, षटरितु, आदि के बड़े ही मनोहर एवं हृदयास्पर्षी वर्णन मिलते है। पम्पा सरोवर के वर्णन मे रमणीयता एव मार्मिकता के साथ –साथ तीव्रगति एवं अद्भुत सौंदर्य भी विद्यमान है। वहां अनेक रंग के कमलो , गूंजते हुए भ्रमरों, कलरव करते हुए जल कुक्टों एवं हंसों , बिहरते हुए चक्रवाक , वक्र एवं खगों , नदियों के किनारे के सपीप स्थित मुनियों के आश्रम, लता विटपों पल्लवित एवं कुसमित विविध वृक्षों, शीतल मंद, सुगंधित मन को हारने वाली पवन एवं कोयल की मधुर ध्वनि से पूर्ण अंकित है–

बिकसे सरसिज नाना रंगाा
मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा
बोलत जलकुक्कट कलहंसा,
प्रभु विलोकि जनु करत प्रंशसा
चक्रवाक बक खग समुदाई
देखत बनई बरनि नहिं जाई
सुंदर खग गन गिरा सुहाई
जात पथिक जनु लेत बोलाई
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए,
चहु दिसि कानन बिटप सुहाए
चंपक बकुल कदंब तमाला
पाटल पनस परास रसाला
नव पल्लव कुसुमित तरूनाना,
चंचरीक पटली कर गाना
शीतल मंद सुगंध सुभाउ,
संतत बहर मनोहर बाउ।[5]

इसी प्रकार वर्षा ऋतु के मनमोहक रूप के साथ–साथ प्रकृति के उपदेशात्मक रूप का चित्रण भी मानस का अनुठा सौंदर्य है–

दामिनी दमक रह न घन माहीं
खलकै प्रीति जथा घिर नाही।
बूंद अघातसहहिं गिरि कैसे
खल के वचन संत सह जैसे।

निष्कर्ष

निष्कर्ष ये है कि रामचिरतमानस सम्पूर्ण विष्व मे भारतीय संस्कृति का एकमात्र ग्रंथ है। यह धार्मिक ग्रंथ तो है, पर साहित्य से सम्पुटित। धर्म और साहित्य दोनो का चरमोत्कर्ष। आदर्श पुरूष, आदर्ष पुंत्र, आदर्ष पति, आदर्ष पिता, आदर्श बन्धु, आदर्श लोक सेवक, आदर्ष मित्र, आदर्ष स्वामी, आदर्ष राजा, आदर्श गृहस्थ एवं आदर्ष वीर आदि नाना रूपों में राम का आदर्ष चरित्र सम्पूर्ण मानव जाति के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है। आज के वैज्ञानिक व सामाजिक परिवेष मे रामचरित मानस का विशेष महत्व है। 21वीं सदी के वर्तमान समय के बदलते सामाजिक, वैज्ञानिक, प्राकृतिक वैज्ञानिक, पर्यावरण, परिवेश में रामचरितमानस का महत्व और भी अधिक हो गया है।[6]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 22,28,30,*
2. *श्रीरामचरितमानस, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश पृष्ठ 55, 58*
3. *कवितावली , अशोक प्रकाशन,नई सड़क दिल्ली पृष्ठ 96*
4. *आजकत मासिक साहित्यिक पत्रिका , जनवरी 2015 पृष्ठ 96*
5. *रचना हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल मार्च 2016 पृष्ठ 58*
6. *स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष।*